بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 04 अप्रैल 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

खैबर के युद्ध तथा वादि-उल-क़ुरा नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरते नबवी स. का बयान।

मोहतरम मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन साहब शाहिद,
सद्र, सद्र अन्जुमने अहमदिय्या भारत का सदवर्णन।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-04.04.2025

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- रमज़ान से पहले आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का युद्धों से सम्बंधित जीवन परिचय बयान हो रहा था और इस विषय में खैबर की लड़ाई का वर्णन हो रहा था। आज भी मैं उसी हवाले से कुछ बयान करूंगा। खैबर की विजय की ख़ुशी के साथ ही उन्हीं दिनों में आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक और ख़ुशी की बात हुई कि जिस पर आप स. ने फ़रमाया कि 'मैं बयान नहीं कर सकता कि मुझे खैबर की विजय से अधिक ख़ुशी हुई अथवा इस बात से कि हज़रत जाफ़र रज़ी. की हबशा के मुहाजिरों के साथ वापसी थी।' हुदैबियः की सन्धि के बाद नबी अकरम सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजाशी की तरफ़ एक पत्र भेजा कि अब जितने मुहाजिर मुसलमान वहाँ रह गए हैं, उनको मेरे पास मदीना भेज दिया जाए। अतः परदेस में चौदह पन्द्रह साल व्यतीत करने के बाद ये लोग दो नावों में सवार होकर मदीने पहुंचे और जब उन्हें पता चला कि आप स. खैबर की ओर गए हुए हैं तो आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को तुरन्त मिलने की तड़प से व्याकुल होकर ये मदीना में रुकने के बजाए खैबर की ओर चले गए। उन लोगों के साथ हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ी. भी अपनी क़ौम के पचास से अधिक लोगों के साथ मदीना पहुंचे थे। उन्हीं के साथ दौस नामक क़बीले से भी कुछ लोग आ गए। उनमें अबू हुरैरह रज़ी. तुफ़ैल बिन उमरू और उसके साथी थे। क़बीला अशजा के भी कुछ लोग आ गए। रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सब आने वालों को भी खैबर में हाथ आई सम्पत्ति में से कुछ न कुछ प्रदान किया।

हज़रत जाफ़र रज़ी. तथा उनके साथ अन्य मुसलमान नाव के द्वारा यात्रा करके पहुंचे थे, इस लिए उनको असहाब-उस-सफ़ीना (कश्ती वाले) कहा जाता है। जब ये मदीना पहुंचे तो पन्द्रह वर्ष का समय बीत चुका था और यहाँ के मुहाजिर मुसलमान कई युद्धों में शामिल हो चुके थे और हिजरत में भी प्राथमिकता लिए हुए थे। इस लिए ऐसा लगता है कि आपस में यह चर्चा होने लगी कि हम उनसे अधिक महत्त्व रखते हैं। एक बार हज़रत जाफ़र रज़ी. की पत्नी हज़रत असमा सुपुत्री उमैस रज़ी. उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ी. से मिलने के लिए उपस्थित हुईं तो वहाँ हज़रत उमर रज़ी. भी थे। आप रज़ी. ने पूछा कि ये कौन महिला हैं? परिचय मिलने पर हज़रत उमर रज़ी. कहने लगे कि हम मदीने की ओर हिजरत में तुम से आगे रहे हैं इस लिए हम तुम्हारी अपेक्षा रसूलुल्लाह स. के अधिक निकट हैं। यह सुन कर वे दुःख एवं क्रोध से बोलीं कि अल्लाह की क़सम! ऐसा कदाचित नहीं हो सकता। तुम लोग तो रसूलुल्लाह स. के साथ रहा करते थे, वे तुम्हारे भूखे को खाना देते, तुम्हारे अज्ञानी को उपदेश देते, जबकि हम अपने देस से दूर परदेस में तथा दूर सुदूर के शत्रु देश में थे। हमें वहाँ भांत भांत की आशंकाएं एवं भय थे, हमने ये सारे दुःख अल्लाह और उसके रसूल के लिए सहन किए, बख़ुदा मैं उस समय तक खाना नहीं खाऊँगी जब रसूलुल्लाह स. से इस सम्बन्ध में न पूछ लूं। फिर वे नबी करीम स. की सेवा में उपस्थित हुईं तथा ये पूरी वार्ता बयान की। इस पर रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया के वे तुम से अधिक अधिकार नहीं रखते बल्कि उनकी तथा उनके साथियों की एक हिजरत है और तुम्हारी अर्थात नाव के द्वारा हबशा की ओर यात्रा करने वालों की दो हिजरतें है।

यहाँ एक हब्शी गुलाम यसार जो मुसलमान हुआ था, उसकी शहादत का भी वर्णन मिलता है। रिवायत में है कि वह खैबर के एक व्यक्ति का रेवड़ चराया करता था, उसके दिल में रसूलुल्लाह स. की याद बैठ गई थी। वह अपनी बकरियों को चराने निकला, मुसलमानों ने उसे पकड़ लिया और रसूलुल्लाह स. के पास ले आए, अथवा एक विस्तृत रिवायत के अनुसार वह स्वंय बकरियां लेकर रसूलुल्लाह स. के पास आया। रसूलुल्लाह स. ने उससे बात चीत की, उस गुलाम ने कहा यदि मैं अल्लाह पर ईमान ले आऊं तो मुझे क्या मिलेगा? रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि यदि तुम उसको मान लो तो तुम्हारे लिए जन्नत होगी। इस प्रकार वह गुलाम ईमान ले आया तथा उसने निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल स.! यदि मैं इनके साथ युद्ध करूं और मारा जाऊं तो क्या मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊंगा? आप स. ने फ़रमाया कि हाँ, तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे। उसने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल स.! ये बकरियां मेरे पास अमानत हैं, इनका क्या करूं? रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि इनको सेना में से निकाल कर ले जाओ और ख़ाली मैदान में छोड़ दो, निश्चय ही अल्लाह तआला तेरी अमानत तेरी ओर से अदा कर देगा अर्थात ये इनके मालिकों तक पहुँच जाएँगी। अतएव ऐसा ही हुआ। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि वे लोग जो आपत्ति करते हैं कि मुहम्मद स. ने धन सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए युद्ध किए, विशेषतः खैबर की लड़ाई के विषय में भी यह आपत्ति की जाती है कि यहूदियों की सम्पदा पर अनाधिकृत रूप से क़ब्ज़ा करने के लिए ये अत्याचार किए गए थे। यदि यह बात सत्य होती तो ठीक युद्ध होते समय दुश्मन की बकरियों का एक रेवड़ और खैबर में जो सहाबा रज़ी. की भूख से जो स्थिति थी, तो यह बकरियां तो मुफ़्त का माले ग़नीमत था, उपयोग में ला सकते थे, परन्तु नबी करीम स. ने युद्ध की अवस्था में भी अमानत का हक़ अदा करते हुए बकरियां वापस करने का निर्देश फ़रमाया। फिर वह हब्शी आगे बढ़ा और उसने युद्ध में भाग लिया, यहाँ तक कि वह शहीद हो गया, जबकि उसने अभी तक एक सजदा भी नहीं किया।

खैबर के अवसर पर कुछ शरीअत के नियमों का भी वर्णन मिलता है। हज़रत अली रज़ी. की रिवायत के अनुसार गधे के मांस और मुताअ पर प्रतिबंध लगा दिया। फ़िदक वालों की रसूलुल्लाह से सन्धि का भी वर्णन है।

खैबर के युद्ध में हाथ आई सम्पदा और इसके वितरण के विषय में हज़रत अबू हुरैरह रज़ी. कहते हैं कि रसूलुल्लाह स. ने खैबर को छत्तीस भागों में विभाजित किया। आप स. ने उनमें से आधे अर्थात अठारह भाग मुसलामानों के लिए आरक्षित फ़रमाए जिनमें से हर एक सौ भागों पर आधारित था अर्थात एक हज़ार आठ सौ भाग थे। नबी अकरम स. का भी एक भाग उनमें से किसी एक भाग के समान था। आप स. ने शेष आधा भाग भविष्य के लिए तथा मुसलमानों के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं के लिए सुरक्षित रखा। खैबर के क़िलों से जब धन सम्पत्ति को एकत्र किया गया तो उसमें तौरात के कुछ ग्रन्थ भी मिले। यहूदियों के कहने पर आप स. ने उनके ग्रन्थ सुरक्षित उनको वापस किए जाने का आदेश दिया। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की धार्मिक सद्भावना तथा धार्मिक भावनाओं एवं आस्था का ध्यान रखने का यह उत्तम उदाहरण था कि उनकी तौरात को वापस करने का आदेश दिया, यह नहीं कि आजकल की तरह मुस्लिम दुश्मनी मैं क़ुरआन करीम को जलाया जाए।

खैबर से वापसी पर वादी-उल-क़ुरा नामक घाटी वाले युद्ध का भी वर्णन मिलता है। रसूलुल्लाह स. ने खैबर में विजय पाने के बाद कुछ दिन वहाँ विश्राम किया, फिर इस्लामी सेना वापसी के लिए रवाना हुई तो वादी-उल-क़ुरा में यहूदियों से मुक़ाबला हुआ। हज़रत अबू हुरैरह रज़ी. बयान करते हैं कि वादी-उल-क़ुरा में रसूलुल्लाह स. के साथ एक मदअम नामक गुलाम भी था। उस समय जबकि वह रसूलुल्लाह स. का कजावा उतार रहा था, एक तीर उसको आ लगा और वह चल बसा। लोग कहने लगे कि इसको शहादत मुबारक हो। तो रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि नहीं, उसकी क़सम कि जिसके हाथ में मेरी जान है, वह चादर इस पर आग बन कर भड़क रही है, जो इसने खैबर के दिन विजय से प्राप्त धन सम्पत्ति में से चुरा ली थी, जबकि उसके आवंटन की क्रिया अभी पूरी नहीं हुई थी। तो एक व्यक्ति ने जब यह सुना कि यह तो अत्यंत भयावह बात है कि उस चादर के चुराने के कारण नरक में जा रहा है, तो वह एक जूते की डोरी अथवा दो डोरियाँ लेकर आया तथा निवेदन पूर्वक कहा कि यह वह चीज़ है जिसको मैंने ले लिया था, तो रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया कि एक डोरी हो कि दो डोरियाँ, आग में डाले जाने का कारण बनते हैं।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- आप स. चार दिन वादी-उल-क़ुरा में ठहरे और फिर वापस मदीना तशरीफ़ ले आए। इसकी विस्तृत जानकारी जो है, इन्शाल्लाह आगे बयान होगी।

फ़रमाया, इस समय कुछ मृतकों का वर्णन करूंगा तथा फिर उनके जनाज़े भी इन्शाल्लाह नमाज़ के बाद होंगे। पहला वर्णन है मौलाना मुहम्मद करीम शाहिद साहब का जो सद्र सद्र अन्जुमने अहमदिय्या क़ादियान थे। पिछले दिनों रमज़ान के दिनों में सतासी वर्ष की आयु में उनका देहान्त हुआ है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिन। मरहूम मूसी भी थे, इनके वालिद बैअत करके जमाअत में दाख़िल हुए थे। चिन्ता कुंठा के मोहतरम सेठ मुहम्मद मोईनुद्दीन साहब ने उनको शिक्षा प्राप्त करने के लिए क़ादियान भिजवाया। मदरसा अहमदिय्या से 1957 में उत्तीर्ण हुए और फिर 1960 में पंजाब यूनिवर्सटी चंडीगढ़ से मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास की, बाद में जामिया अहमदिय्या रबवा से शहीद की डिग्री प्राप्त की। इस तरह भारत में शाहिद की डिग्री प्राप्त करने वाले आप पहले मुरब्बी थे। क़ादियान में विभिन्न स्तरों पर सेवाओं का अवसर इनको मिलता रहा और इसी बीच सद्र अजनुमने अहमदिय्या क़ादियान में विद्वान के रूप में नियुक्त हुए। इनको एडिशनल नाज़िम इरशाद वक्फे जदीद बैरून, सदर उमूमी, सद्र मजलिस वक्फ़

जदीद, फिर दो बार प्रधान अध्यापक जामिया अहमदिय्या, सदर क़ज़ा बोर्ड तथा सदर मजलिस कारपर्दाज़ के रूप में भी सेवा करने का अवसर मिला। फिर 2021 में मैंने सद्र सद्र अन्जुमने अहमदिया नियुक्त किया था और मृत्यु होने तक वे इसी पद पर नियुक्त रहे।

नाज़िर साहब आला क़ादियान कहते हैं कि मरहूम अत्यंत सरल स्वभाव और अत्यधिक संतोष के साथ जीवन व्यतीत करने वाले इंसान थे। (हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- और यह सत्य है, मैंने भी देखा है यह) मरहूम को सिसिले की ओर से जो वज़ीफ़ा अथवा आय होती, उसी मैं सज्जनता के साथ गुज़ारा करते और ऋण लेकर ख़र्च करने को अति घृणित समझते। अत्यंत सुन्दर लेखनी वाले कातिब थे। जब तक कम्पूटर पर कम्पोज़िंग का सिलसिला शुरू नहीं हुआ अख़बार बदर तथा सिलसिले की पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की किताबत की तौफ़ीक इनको मिलती रही, अच्छे भाषण करने वाले थे, निबंध लेखक थे, जलसा सालाना क़ादियान तथा अन्य जमाअती तक़रीरों तथा प्रशिक्षण जलसों में तक़रीर करने का अवसर मिलता रहा। क़ादियान से एम् टी ऐ पर लाइव प्रसारित होने वाले राहे हुदा प्रोग्राम में लम्बी अवधि तक प्रश्नों के उत्तर देने का सामर्थ्य मिला। गुर्दों के रोगी थे और दुर्बल भी हो गए थे लेकिन इसके बावजूद बड़ी हिम्मत से अपने कर्तव्व्य का निर्वाह करते रहे और उनका नमूना वास्तव में अनुसरण योग्य था। रोग एवं दुर्बल स्वस्थ्य के बावजूद बड़ी हिम्मत से उन्होंने जलसा सालाना क़ादियान 2024 के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता भी की। इसी तरह उन्होंने गत शूरा के इजलास की भी अध्यक्षता की। उनको अल्लाह तआला ने 62 वर्ष की दीर्ध अवधि तक सिलसिले की सेवा करने का अवसर प्रदान किया। जीवन के अन्तिम क्षणों में घर वालों को इस बात का इज़हार किया करते थे कि मेरा जन्म रमज़ान के महीने में हुआ, देखना कि मेरी मृत्यु भी रमज़ान में होगी। अतः 27 रमज़ानुल मुबारक को उनका निधन हुआ। अत्यंत परिश्रमी तथा विनम्र इंसान थे। सदेव यह प्रयास होता था कि अपने काम स्वंय करें, किसी पर बोझ ना बनें, बल्कि अपने वयक्तिगत कार्य भी स्वंय किया करते थे, कर्मशील एवं विद्वान् पुरुष थे। वक्फ़ की जो प्रतिज्ञा की थी उसके निर्वाह का उन्होंने हक़ अदा कर दिया। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलंद करे। उनकी पहली शादी इक़बाल बेगम साहिबा से हुई थी जिनसे दो बेटे और दो बेटियाँ हैं। उनकी वफ़ात हो गई तो फिर उनकी दूसरी शादी हुई, उनके बच्चे बेटियाँ, दामाद इत्यादि उन सबको दीन की सेवा करने का सुअवसर मिल रहा है। अल्लाह तआला उनकी नस्लों में भी दीन की सेवा करने की भावना को क़ायम रखे।

तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम अब्दुल रशीद याहया साहब सद्र क़ज़ा बोर्ड केनेडा, मिर्ज़ा इम्तियाज़ अहमद साहब, अमीर ज़िला हैद्राबाद, सिंध। मुकर्रम अलहाज मुहम्मद बिलअरबी आफ़ अलजज़ायर और मुकर्रम मुहम्मद अशरफ़ साहब कोटरी, ज़िला हैद्राबाद का भी सदवर्णन फ़रमाया तथा मृतकों के दर्जात की बुलंदी और मग़फ़िरत के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131